संतुलन

प्रकृति संतुलन के साथ रहती है। आप इस संतुलन को नष्ट नहीं कर सकते। अच्छे और बुरे दो विरुद्ध हमेशा संतुलन में रहते है। यदि आप एक को नष्ट करें तो दूसरा विरुद्ध भी नष्ट हो जाता है। यह प्रकृति का गहरा नियम है। इस दुनिया में अगर कोई बुरा नहीं होता तो अच्छा भी नहीं होगा। अगर कोई पापी नहीं होता तो कोई संत भी नहीं होगा। संत पापी के खिलाफ खड़ा होकर एक दूसरे पर निर्भर होता है। इसलिए केवल अच्छी दुनिया बनाना असंभव है। यह प्रयास कभी भी सफल नहीं होगा। क्योंकि यह मूल संतुलन नियम को तिरस्कार करता है।

अगर आप केवल अच्छा बनने के लिए कड़ी मेहनत करोगे तो दो चीजें संभव है। आप अच्छे को अधिक मजबूत बना सकते हैं, लेकिन बुरा भी उसी तुलना में ताकत हासिल करता है। या आप बुरे को नष्ट करने की कोशिश कर सकते हैं, तभ अच्छा जिसे आप मजबूत बनाना चाहते हैं वह भी नष्ट हो जाएगा।

जीवन संतुलन है। इसलिए सिर्फ अच्छा रहने की कोशिश करना एक व्यर्थ प्रयास है। मतलब यहाँ मैं केवल बुरा रहने के लिए भी नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि तब भी संतुलन नष्ट हो जाएगा। अध्यात्म का मतलब बुराई के खिलाफ अच्छाई पैदा करना नहीं है। अध्यात्म का अर्थ है संतुलित दुनिया बनाना। इसमें अच्छे और बुरे दोनों अपने आप को हमेशा समन्वय करता रहता है।

यदि कोई अच्छी दुनिया बनाना चाहता है, तो दूसरे भी बुरी दुनिया बनाने की इच्छा जरूर करेगा। क्योंकि पूरी शक्ति चुनने के बजाय आपने इसका हिस्सा चुना। शुद्ध शक्ति का कोई रूप नहीं है। इसमें अच्छे-बुरे-तटस्थ हिस्से समान तुलना में होते है। यह न केवल संतुलन में रहते है, बल्कि एक होकर रहते है। लेकिन मन इसे तीन टुकड़ों में विभाजित करके हमें दिखाता है, और कहता है कि तीनों अलग-अलग हैं, और यह एक दूसरे के दुश्मन है। इन तीनों टुकड़ों को माया के नाम से भी जाना जाता है। इसलिए यदि किसी ने एक भाग को चुनता है, अर्थात् यदि केवल अच्छा चुने तो, शेष दो भाग अर्थात् बुरा और तटस्थ को भी दूसरों द्वारा चुना जाना चाहिए। अन्यथा किसी की इच्छा पूरी नहीं होगा।

इसलिए गर्व महसूस न करें कि आप इस सृष्टि के लिए कुछ कर रहे है। क्योंकि आप संकल्प करने के बाद, बाकी दो हिस्सों को दूसरों ने चुनने के बाद ही, आपकी संकल्प पूरी होती है। इसलिए अपनी इच्छा के कारण सृष्टि को काम मत दो। क्योंकि संतुलन बनाए रखने के लिए सृष्टि को दूसरों के दिमाग में शेष शक्ति भेजने का काम करना पड़ता है।

लेकिन अगर आपको लगता है कि, मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि दूसरों के साथ क्या होता है, मैं केवल अच्छा चुनता हूं, तो यह हमेशा काम नहीं करेगा। क्योंकि बाद में सृष्टि आपको बुरे और तटस्थ विचार भेजेगा। क्योंकि आप राग-द्वेष में, कर्म के चक्र में फंसे हुए हैं,

इसलिए आप अपनी स्थिति के अनुसार निश्चित रूप से आप उन्हें आकर्षित करेंगे। इसलिए इसे ठीक से समझें।

यदि मनुष्य अच्छे-बुरे-तटस्थ से परे गया तो, वह व्यक्ति योगी बन जाता है। वह संतुलन में रहता है। भीतर उनके बीच गहरा संतुलन होता है। वह सृष्टि के लिए कोई काम नहीं छोड़ेगा, क्योंकि वह किसी एक भाग को नहीं चुनता। यदि वह चुनता है तो सब कुछ चुनता है, या वह चुने बिना रहता है, या वह शुद्ध शक्ति को जैसा है वैसा ही उपयोग करता है। वह सृष्टि से परे रहता है। इसलिए सृष्टि द्वारा भेजे गए विचारों को स्वीकार करना उसके लिए अनिवार्य नहीं है।

जब विरुद्ध संतुलित होते हैं, आप उनसे परे जाएंगे। उदाहरण के लिए यदि आप केवल स्वास्थ्य या केवल बीमारी या केवल तटस्थ महसूस करते हैं तो आप असंतुलित स्थिति में है। यदि आप शरीर में केवल शुद्ध शक्ति महसूस करते हैं तो आप संतुलन में है। आप स्वस्थता महसूस करने का मतलब, द्वंद्व के एक तरफ जाना। तब आप निश्चित रूप से बीमार हो जाएंगे। यह याद रखना!

यह हर दिन होता है, लेकिन आपको इसके बारे में जागरूकता नहीं है। जैसे ही आप खुशी महसूस करते हैं, खुशी खत्म हो जाती है। अगर आपको किसी चीज़ के प्रति जागरूकता आती है तो आप चरम पर पहुंच गए है। तो लौट आओ। असंतुलन को ठीक करो। संतुलन हासिल करने के लिए विरुद्ध दिशा में यात्रा करें, साथ ही उनके बीच दोस्ती बनाएं और उसके बाद इसे एकजुट कीजिए।

आदमी रस्सी पर एक लकडी पकड़ कर दाएं से बाएं और बाएं से दाएं झुकते हुए अपने आप को संतुलित करके आगे बढ़ता है। इसी तरह, आप भी लगातार अच्छे से बुरे, बुरे से अच्छे की ओर, स्वास्थ्य से बीमारी और बीमारी से स्वास्थ्य की ओर जागरूकता के साथ चलिए। तब विरुद्ध शक्तियां, एक दूसरे को नष्ट करने की कोशिश नहीं करते हुए शक्ति को बर्बाद किये बिना, एक साथ विकसित होकर शुद्ध हो जाती है। इस तरह यदि आप अभ्यास जारी रखते हैं तो आप उन दो शक्तियों के बीच में रहने वाले तटस्थ स्थिति में पहुंच जाएंगे। उसके बाद यदि आप अभ्यास जारी रखते हैं तो आप अच्छे-बुरे-तटस्थ से परे जाएंगे।

योगी वह है जो रस्सी से नीचे उतरा है। यह दाईं से बाईं ओर यात्रा करने की परवाह नहीं करेगा। वह अच्छे-बुरे-तटस्थ से परे पहुंच गया है। अध्यात्म का अर्थ है, परे जाना। योगी जानता है कि: बुरे को नष्ट नहीं कर सकते क्योंकि यह संतुलन का हिस्सा है; अकेले अच्छा नहीं रह सकता दोनों की जरूरत है; विरुद्ध के कारण ही यह अस्तित्व सजीव है; खुशी के बाद दर्द, दर्द के बाद खुशी निश्चित रूप से आती है। यह ज्ञान को समझ के योगी इनसे परे जाते है। वह किसी एक को नहीं चुनता। वह बुरे के खिलाफ अच्छा को नहीं चुनता। क्योंकि वह अनुभव पूर्वक से जान लिया कि, अगर वह ऐसा करे तो बाद में अच्छे के खिलाफ बुरा भी चुनने की अनिवार्य स्थिति पैदा होगी। इसलिए यदि आप एक दिशा की ओर यात्रा करे तो, निश्चित रूप से आपको विरुद्ध दिशा में भी यात्रा करनी होगी।

आप अच्छे के प्रति कितनी जागरूकता रहेंगे, निश्चित रूप से आप बुरे को भी उसी तुलना में पाएंगे। मतलब आप जो भी तिरस्कार करते है उसको सृष्टि भी करते है। इसलिए आप जो भी करते हैं वह दोनों दिशाओं में चलता है। दोनों तरफ एक ही समय में बढ़ते हुए संतुलन हमेशा बनता है।

मतलब आप कितने अच्छे कर रहे है उतना बुरा भी कर रहे है। मतलब आप बुरे की पहचान करके उसे समीक्षा करके द्वेश कर रहे है। आप बाहर बुरा नहीं करते, लेकिन अंदर सिर्फ द्वेश करने से, यह बुरा कर्म बन जाता है। तो द्वेश करने के बदले में आपको बुरा परिणाम मिलेगा। जो आप दूसरों को देते हैं वही आपको बदले में मिलता है। यदि आप राग-द्वेश से परे जाते हैं तो, आप सभी को केवल शुद्ध शक्ति भेजेंगे, और बदले में शुद्ध शक्ति ही प्राप्त करेंगे।

आध्यात्मिकता, अमीर या गरीब की दुनिया का निर्माण नहीं करती, यह संतुलन की दुनिया का निर्माण करती है। इसे समझने की कोशिश करें। अमीर नहीं, गरीब नहीं, संतुलन दुनिया। उनमें से किसी को, गरीबी के बारे में या अमीरी के बारे में जागरूकता नहीं होगा। मतलब वे जानते हैं कि, ये दो विरुद्ध हमेशा मौजूद रहेंगे। तो अब केवल उनके परे हम जा सकते है।

उदाहरण के लिए रोगों से लड़ने के लिए विभिन्न तरीकों का आविष्कार किया गया है। लेकिन आदमी पहले से ज्यादा बीमार है। ऐसा क्यों हो रहा है? जब दवाओं के आविष्कार में वृद्धि होती है तो उसी तुलना में बीमारी भी क्यों बढ़ रही है? ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता है, वैसे-वैसे अज्ञान भी स्थिर हो जाती है। यदि स्वास्थ्य में सुधार होता है, तो बीमारी भी बढ़ेगी। यदि आप अच्छा बनाते है, तो कहीं न कहीं किसी को बुरा बनना पड़ेगा। यहां कुछ भी गलत नहीं हो रहा है, यहां दुनिया हमेशा खुद को संतुलित कर रही है।

केवल अच्छे लोगों के साथ दुनिया सजीव नहीं रह सकती। अगर केवल अच्छे रहेंगे तो दुनिया निराश हो जाती है। जीवन हमेशा विरुद्ध से भरा रहता है। केवल विरुद्ध एक साथ रहने के कारण, नई संभावनाएं प्रकट होती है। आध्यात्मिकता का अर्थ, विरुद्ध में से किसी एक को चुनना नहीं। आध्यात्मिकता का अर्थ, विरुद्ध को समझना और गैर-चयन रवैया सीख कर उसमें स्थिर रहना।

आध्यात्मिक व्यक्ति चुनने के बिना रहता है। अगर वह बीमारी के साथ है तो उसमें वह सुरक्षित रहता है। वह स्वास्थ्य के लिए तरसता नहीं। यदि वह स्वस्थ है तो वह इसमें आराम से रहता है। उसे इसके प्रति जागरूकता नहीं होगी। जो भी उसके पास आता है उसे वह दिव्य रूप से अनुभव करेगा। दिव्य रूप से अनुभव करें तो, कोई भी चीज अपने आप विकसित होगी। तो वह अनुभव पर ध्यान केंद्रित करते हुए, बिना चुनके, विरुद्ध के बीच आसानी से यात्रा करता है। उसकी चाल धीरे-धीरे कम हो जाती है। इस तरह अभ्यास को जारी रखे तो, उसे इधर-उधर जाने की कोई जरूरत नहीं होगी, क्योंकि सब कुछ अपने आप होता है। यह केवल चयन छोड़ने

के कारण होता है। यदि आप चयन करेंगे तो आप आगे बढ़ेंगे, साथ ही विरुद्ध को भी पैदा करेंगे।

आपको यह बात अजीब लग सकता है, लेकिन अगर आप अच्छा बनने की कोशिश करेंगे तो निश्चित रूप से आप बुरे बन जाएंगे। इसलिए भले ही यह मुश्किल लगे, बिना किसी चयन के, जो कुछ भी हो रहा है, उसे अनुमति दें। अगर क्रोध आए तो आने दीजिए, चयन न करें। अगर प्यार होता है तो उसे होने दीजिए, चयन न करें। यदि आप ऐसा करें तो, निश्चित रूप से एक दिन ऐसी स्थिति आती है जहां क्रोध और प्रेम नहीं होगा। इसलिए या तो सब कुछ चुनें या कुछ भी न चुनें। यदि आप केवल एक भाग को चुने तो, आप अच्छे-बुरे चक्र में फंस जाएंगे।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**

दान

न्यूएनर्जी-अद्वैत ज्ञान से प्रेरित कोई व्यक्ति या कोई भी, दान करना चाहता है, तो कृपया निम्नलिखित बैंक खाते में पैसा जमा करें। आपकी मदद हमें इस ज्ञान को बहुत सारे लोगों तक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। Name: P.Sreedhar; SBI Bank A/c No: 30603897922. Branch: Hanamkonda; City: Hanamkonda, Warangal District, India. IFSC Code: SBIN0003422 Mobile No: 9390151912. आपकी उदारता और समर्थन की सराहना की जाती है! This mobile No. also has GooglePay and PhonePe.